अनुमान और कल्पना

1. **दिए गए मौसमों में आप जो-जो करना पसंद करते हैं, उन्हें तालिका में लिखिए–**

गरमी	सरदी	वर्षा	बसंत
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

2. सभी ऋतुओं के नाम और प्रत्येक ऋतु में जिन वस्तुओं की बहुत आवश्यकता होती है, उनके बारे में बताइए।
3. 'भारत ऋतुओं का देश है'–इस विषय पर कक्षा में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

भाषा की बात

1. **नीचे दिए गए शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए–**

(क) जीत – ..... (ख) प्यारा – .....

(ग) कहती – ..... (घ) शोर – .....

2. **कविता में से तीन व्यक्तिवाचक और तीन जातिवाचक संज्ञा शब्द छाँटकर लिखिए–**

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
(क)	(क) .....
(ख)	(ख) .....
(ग)	(ग) .....

3. **नीचे लिखे शब्दों को उलटा लिखकर नए सार्थक शब्द बनाइए–**

(क) सब – .....बस..... (घ) रहा – .....

(ख) पता – ..... (ङ) हवा – .....वाह.....

(ग) नदी – ..... (च) नाच – .....

जीवन मूल्य

- एक वर्ष में महीनों का क्रम बदलने से वातावरण बदल जाता है।
- एक वर्ष के बारह महीने अपनी-अपनी विशेषता लिए आते हैं।

1. महीनों के बदलते क्रम से यह अहसास होता है कि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। कैसे?
2. महीनों की पहचान की तरह अपनी पहचान बनाने के लिए क्या करना चाहिए?

कुछ करने के लिए

1. **भारत में मनाए जाने वाले किन्हीं पाँच त्योहारों के नाम व उनके मनाए जाने वाले महीनों के नाम लिखिए–**

	त्योहार का नाम	महीने का नाम
(क)	.....	.....
(ख)	.....	.....
(ग)	.....	.....
(घ)	.....	.....
(ङ)	.....	.....

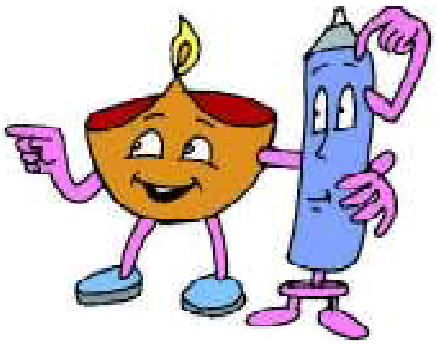

2. **जो ऋतु आपको सबसे अच्छी लगती है, उस पर एक छोटी-सी कविता लिखिए–**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2 नाटक में नाटक

राकेश का मन तो कह रहा था कि बिना पूरी तैयारी के नाटक नहीं खेलना चाहिए और जब नाटक में अभिनय करने वाले कलाकार भी नए हों, मंच पर आकर डर जाते हों, घबरा जाते हों और कुछ-कुछ बुद्धू भी हों तब तो अधूरी तैयारी से खेलना ही नहीं चाहिए। उसके साथी मोहन, सोहन और श्याम ऐसे ही थे। राकेश को उनके अभिनय पर बिलकुल भी विश्वास नहीं था। वह स्वयं अभिनय इसलिए नहीं कर रहा था, क्योंकि फुटबाल खेलते हुए वह अचानक गिर पड़ा था। उसके हाथ में चोट लग गई थी और हाथ को एक पट्टी में लपेटकर गर्दन के सहारे लटकाए रखना पड़ता था।

नाटक खेलना बहुत आवश्यक था। मोहल्ले की इज़्ज़त का सवाल था। मोहल्ले के बच्चों ने मिल-जुलकर फालतू पड़े एक छोटे-से सार्वजनिक मैदान में **दूब** व फूल-पौधे लगाए थे। वहीं एक मंच भी बना लिया था। राकेश की योग्यता पर सबको बहुत विश्वास भी था।

समय था—केवल एक सप्ताह का। सात दिन ऐसे निकल गए कि पता भी नहीं लगा! मोहन, सोहन और श्याम यूँ तो अच्छी तरह अभिनय करने लगे थे, पर राकेश को उनके बुद्धूपन से डर था। हर एक अपने को दूसरे से अधिक

शब्दार्थ: **दूब**—घास

समझदार मानता था। इसलिए यह भूल जाता था कि वह कहाँ क्या कर रहा है–बस कहने से मतलब! दूसरे चाहे उनकी मूर्खतापूर्ण बातों पर हँस रहे हों, मगर वे पागलों की तरह आपस में ही उलझने लगते थे।

राकेश ने पूर्वाभ्यास के सात दिनों में उन्हें बहुत अच्छी तरह समझाया था। निर्देशन उसने इतना अच्छा दिया था कि छोटी-से-छोटी और साधारण-से-साधारण बात भी समझ में आ जाए।

खैर, **प्रदर्शन** का दिन और समय भी आ गया। राकेश साज-सज्जा कक्ष में खड़ा सबको खास-खास हिदायतें फिर से दे रहा था।

मोहन बोला, ''मेरा दिल तो बहुत ज़ोरों से धड़क रहा है।''

''मेरा भी,'' सोहन ने सीने पर हाथ रखकर कहा।

''तुम लोग पानी पियो और मन को साहसी बनाओ,'' राकेश ने फिर हिम्मत बढ़ाई।

जैसे-तैसे अभी तक तो ठीक-ठाक हो गया। अभिनेता मंच पर आ गए। पर्दा उठा।

मोहन बना था–चित्रकार और सोहन बना था–उर्दू का शायर। नाटक में दोनों दोस्त होते हैं। चित्रकार कहता है–उसकी कला महान, शायर कहता है–उसकी कला महान! श्याम बनता है–संगीतकार।

वह उनसे मुलाकात करने उस स्थान पर आता है, जहाँ वे यह बहस कर रहे हैं। बजाय इसके कि वह नए-नए मित्रों से मधुर बातें करे, बड़े-छोटे के इस विवाद में उलझ जाता है। वह कहता है–संगीतकार की कला महान!

अभी तक अभिनय अच्छी तरह चल रहा था। सबको अपना-अपना **'पार्ट'** याद आ रहा था। सब ठीक-ठीक अभिनय करते चले जा रहे थे। अचानक श्याम अपना पार्ट भूल गया।

शब्दार्थः प्रदर्शन–दिखाना, नाटक को मंच पर करना; **पार्ट**–हिस्सा, भूमिका

पर्दे की **आड़** में राकेश स्वयं पूरा लिखित नाटक लिए खड़ा था। वह हर नए संवाद का पहला शब्द बोल रहा था ताकि कलाकारों को संवाद याद आते रहें।

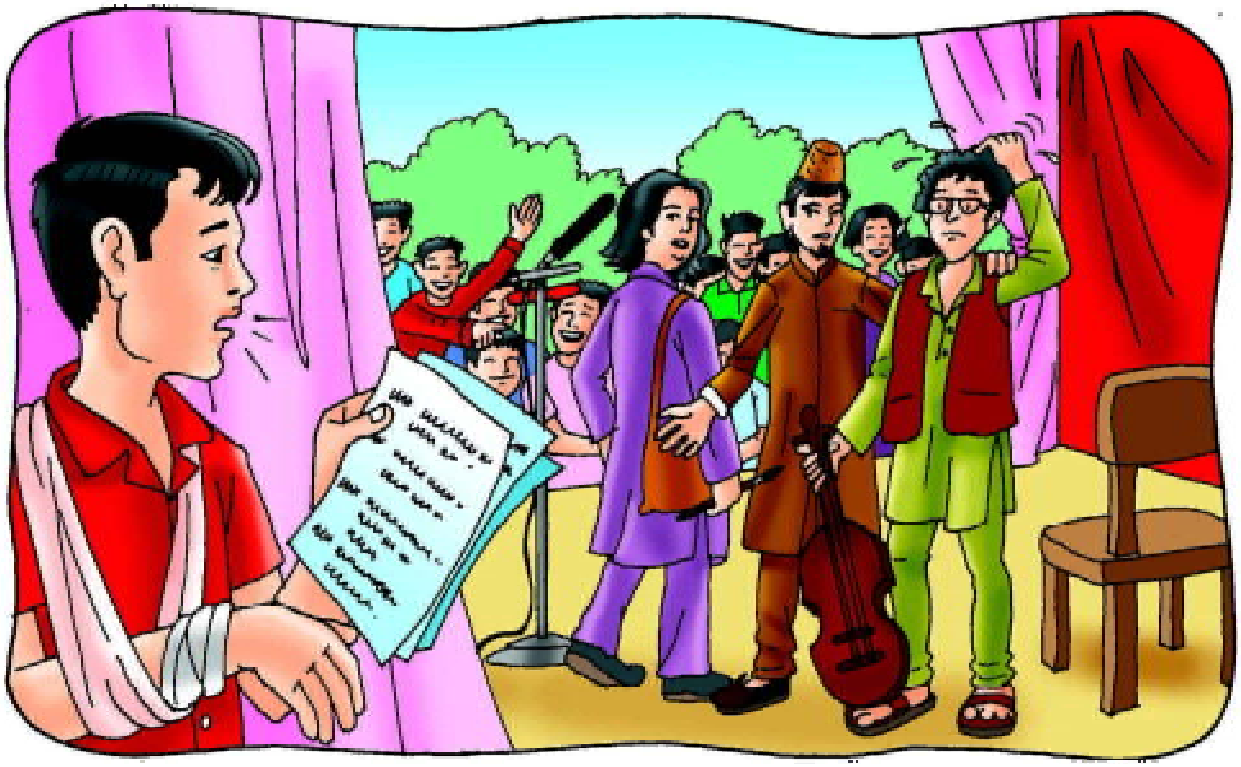

मगर श्याम घबरा गया। वह सहसा चुप हो गया। उसके चुप होने से चित्रकार और शायर महोदय भी चुप हो गए। होना यह चाहिए था कि वे दोनों कोई बात मन से ही बनाकर बात आगे बढ़ा देते, पर वे घबराकर राकेश की तरफ़ देखने लगे। संगीतकार महोदय भी पलटकर राकेश की ओर देखने लगे।

राकेश बार-बार संगीतकार जी का संवाद बोल रहा था मगर आवाज़ तेज़ होकर 'माइक' से सबको न सुनाई दे जाए, इसलिए धीरे-धीरे फुसफुसाकर बोल रहा था। संगीतकार जी को वह हल्की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी।

तभी शायर साहब संगीतकार के कंधे पर हाथ मारकर बोले, ''उधर जाकर सुन ले न।'' संगीतकार जी अपना वायलिन पकड़े-पकड़े राकेश की ओर खिसक आए!

दर्शक **ठठाकर हँस** पड़े। संगीतकार जी और घबरा गए। जो कुछ सुनाई पड़ा उसे ही बिना समझे-बूझे झट-से बोलने लगे।

संवाद था–''जब संगीत की स्वर-लहरी गूँजती है तो पशु-पक्षी तक मुग्ध हो जाते हैं, शायर साहब! आप क्या समझते हैं संगीत को?''

मगर संगीतकार साहब बोल गए यों–''जब संगीत की स्वर-लहरी गूँजती है तो पशु-पक्षी तक मुँह की खा जाते हैं, गाजर साहब! आप क्या समझते हैं हमें?''

शब्दार्थः आड़–(पर्दे के) पीछे; **ठठाकर हँसना**–ज़ोर से हँसना

शायर साहब **तपाक** से बोले, ''तुम्हारा सर! गाजर साहब हूँ मैं?''

दर्शक फिर ठठाकर हँस पड़े।

चित्रकार महोदय ने मंच पर सूझ और अक्लमंदी दिखाने की कोशिश की–''इनका मतलब है आपकी शायरी गाजर-मूली है और आप गाजर साहब हैं! सो इनकी कला महान है। मगर मेरी कला इनसे भी महान है।''

राकेश दाँत पीस रहा था। उसकी सारी मेहनत पर पानी पड़ गया था। पर इस तरह बात सँभलते देखकर वह कुछ शांत हुआ।

इस बार शायर साहब बुद्धूपन दिखा बैठे।

गुस्सा होकर बोले, ''तूने भी गलत बोल दिया। मुझे गाजर साहब कहने की बात थी क्या? और मेरी शायरी गाजर-मूली है तो तेरी चित्रकला झाड़ू फेरना है, पोतना है, पालिश करना है, **झख मारना** है!''

चित्रकार महोदय ने हाथ उठाकर कहा, ''देख, मुँह सँभालकर बोल!''

दर्शक फिर ज़ोर से हँस पड़े।

राकेश घबरा रहा था। गुस्सा भी आ रहा था उसे और रोना भी। सारी इज़्ज़त मिट्टी में मिल गई। पर अब क्या हो? वह बार-बार दोनों हथेलियों को मसल रहा था और कोई तरकीब सोच रहा था।

शब्दार्थः तपाक–झट से; **झख मारना**–बेकार के कामों में समय व्यतीत करना

इधर मंच पर तीनों में ज़ोरों से तू-तू मैं-मैं हो रही थी। चित्रकार महोदय हाथ में कूँची पकड़े, आँखें नचा-नचाकर, मटक-मटककर बोल रहे थे–

''अरे चमगादड़ तुझे क्या खाक शायरी करना आता है! ज़बरदस्ती ही तुझे यह पार्ट दे दिया। तूने सारा गड़बड़ कर दिया।''

''मुझे चमगादड़ कहता है? अबे **करमकल्ले**, आलूबुखारे, शायरी तो मेरी बातों से टपकती है। तूने कभी 'टूथ-ब्रुश' के अलावा भी कोई ब्रुश उठाया है? यहाँ चित्रकार बना दिया तो सचमुच ही अपने को चित्रकार समझ बैठा।''

दर्शक हँसी से लोट-पोट हुए जा रहे थे। संगीतकार महोदय कभी उन दोनों लड़ते हुओं की ओर हाथ नचाते, कभी दर्शकों की ओर।

तभी तेज़ी से राकेश मंच पर पहुँच गया। सब चुप हो गए, **सकपका** गए। राकेश एक कुर्सी पर बैठते हुए बोला–''आज मुझे अस्पताल में हाथ पर पट्टी बँधवाने में देर हो गई तो तुमने इस तरह 'रिहर्सल' की है! ज़ोर-ज़ोर से लड़ने लगे! अभिनय का दिन बिलकुल पास आ गया है और हमारी तैयारी का यह हाल है!''

चित्रकार महोदय ने इस समय अक्लमंदी दिखाई। बोले, ''हम क्या करें डायरेक्टर साहब? पहले इसी ने गलती की!''

शब्दार्थः करमकल्ले–गाँठ गोभी; **सकपका जाना**–घबरा जाना

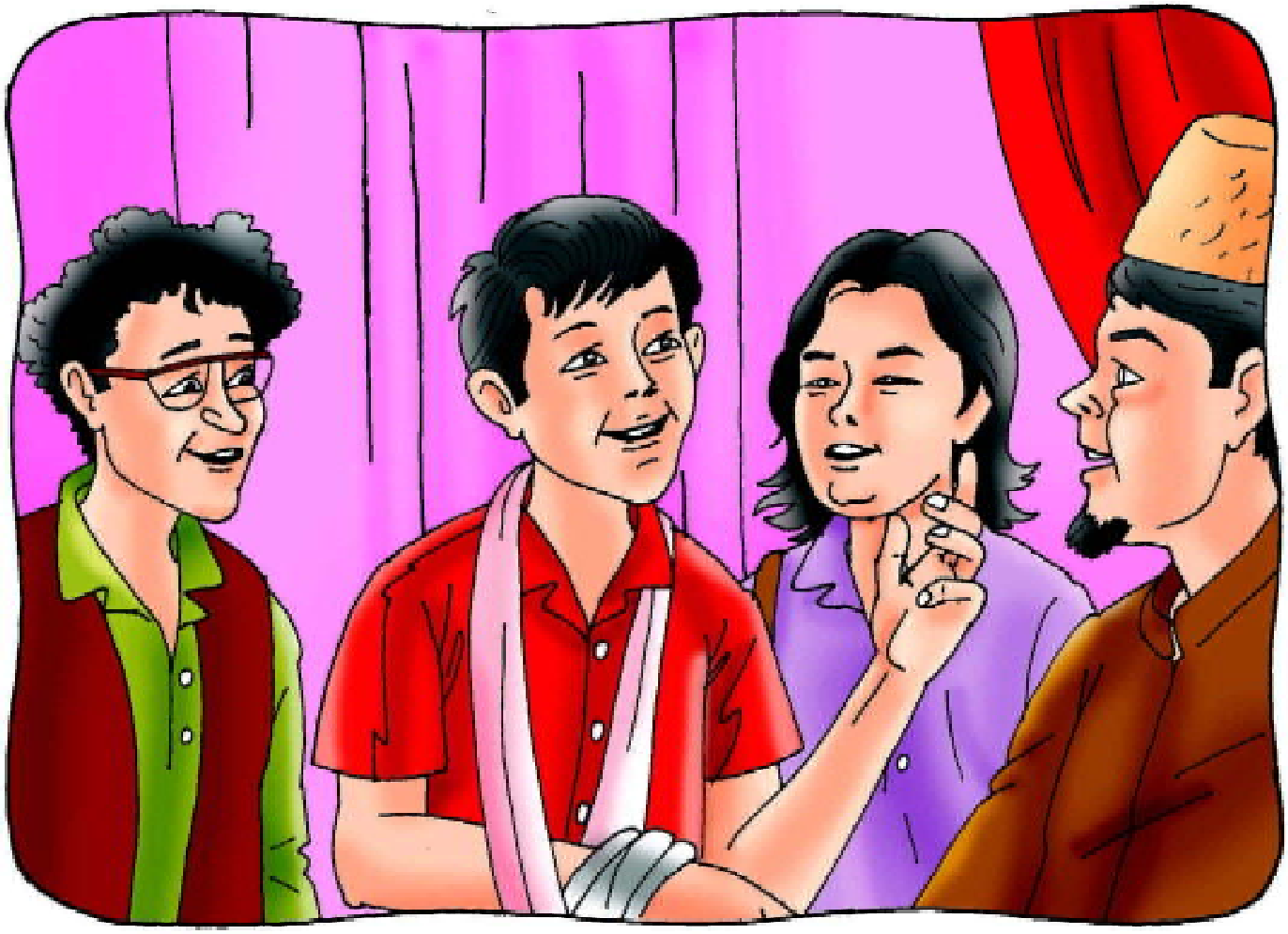

राकेश बात काटकर बोला, ''अरे तो मैंने कह नहीं दिया था कि रिहर्सल में भी यह मानकर चलो कि दर्शक सामने ही बैठे हैं? अगर गलती हो गई थी तो वहीं से दोबारा रिहर्सल शुरू कर देते। यह क्या कि लड़ने लगे! सब गड़बड़ हो गया। सब गड़बड़ करते हो।''

बात राकेश ने बहुत सँभाल ली थी। पर्दे की आड़ में खड़े अन्य साथी मन-ही-मन राकेश की तुरंत-बुद्धि की प्रशंसा कर रहे थे। सब दर्शक शांत थे, **भौंचक्के** थे। वे सोच रहे थे यह क्या हो गया! वे तो समझ रहे थे कि नाटक बिगड़ गया, मगर यहाँ तो नाटक में ही नाटक था। उसका रिहर्सल ही नाटक था। मानो इस नाटक में नाटक की तैयारी की कठिनाइयों और कमज़ोरियों को ही दिखाया गया था!

राकेश कह रहा था, ''देखिए, हमारे नाटक का नाम है–'बड़ा कलाकार' और बड़ा कलाकार वह है, जो दूसरे की **त्रुटियों** को नहीं अपनी त्रुटियों को देखे और सुधारे। आइए, अब हम फिर से 'रिहर्सल' शुरू करते हैं।''

तभी राकेश के इशारे पर पर्दा गिर गया। दर्शक नाटक की **भूरि-भूरि प्रशंसा** करते हुए अपने घर चले गए।

–मंगल सक्सेना

शब्दार्थ: भौंचक्के–हैरान; **त्रुटियाँ**–गलतियाँ; **भूरि-भूरि प्रशंसा करना**–बहुत तारीफ़ करना